हयाते इमाम मूसा काज़िम (अ०)

हज़रत शहीद सफीपुरी
अनुवादक : लायक़ रिज़ा नक़वी

नाम व नसब:

इस्मे मुबारक मूसा, कुनियत अबुलहसन व अबुइब्राहीम अबु अली अबुइस्माईल। लेकिन अबुलहसन सबसे मशहूर है। अलक़ाब काज़िम, साबिर, सालेह व अमीन। मशहूर लक़ब काज़िम है। आपके वालिदे बुजुर्गवार हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ0) थे और माँ हमीदा बरबरिया थीं।

पैदाइश:

7 सफ़र 129 हि0 को पैदाइश अबवा में हुई जो मक्के और मदीने के दरमियान एक जगह है।

इमामत:

आप 148 हि0 में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की वफ़ात के बाद बीस साल की उम्र में इमामत के दर्जे पर फ़ाएज़ हुए। अपने मुक़द्दस बाप के फ़ैज़े परवरिश और ज़ाती ख़ूबियों ने हज़रत को इल्म के निहायत बुलन्द दर्जे पर पहुँचा दिया था। बीस साल के छोटे से अर्से में आपके इल्मी कमालात की शोहरत हो गयी और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) ने आपको अपना जानशीन मुक़र्रर कर दिया। मालूम हुआ कि इमामत एक ख़ास इल्म के दर्जे का नाम है जो मीरास से नहीं मिल सकती है।

इमाम के ज़माने के सियासी हालात:

हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ0) मन्सूर दवानेक़ी की ख़िलाफत के आख़री दौर में इमाम हुए। मन्सूर दवानेक़ी निहायत ज़ालिम बादशाह था उसने बेशुमार सादात को क़त्ल करा दिया था। और ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिया था। इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के ख़िलाफ उसने साज़िशें कीं यहाँ तक कि धोके से ज़हर देकर शहीद करा दिया। इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) को भी अपने बाद इमामे मूसा काज़िम (अ0) पर मज़ालिम का अन्देशा था। यही वजह थी कि आप ने दुनिया से रुख़सत होने से पहले अपनी जाएदाद के इन्तिज़ाम के लिए पाँच वसी मुक़र्रर फ़रमा दिये थे और उन पाँच आदमियों के ख़ुद मन्सूर का नाम भी था। इसके अलावा मुहम्मद बिन सुलेमान हाकिमे मदीना अपने बड़े भाई अब्दुल्लाह अफ़तह, हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ0) और उनकी मुअज़्ज़मा माँ हमीदा बरबरिया को भी वसी मुक़र्रर किया। इमाम (अ0) ने मन्सूर को वसी मुक़र्रर करके उसकी सियासी कार्यवाइयों में रुकावट डाल दी जब मन्सूर को हज़रत की वफ़ात की ख़बर हुई तो उसने मसलहत समझते हुए तीन बार ''इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैइहि राजिऊन'' कहा और फिर हाकिमे मदीना को लिखा के उन्होंने पाँच वसी मुक़र्रर किए हैं जिनमें से आप भी हैं वह यह सुनकार ख़ामोश हो गया और कहने लगा कि फिर यह लोग क़त्ल नहीं किए जा सकते। इसके बाद उसने इमाम से कोई ज़बरदस्ती नहीं की। मन्सूर उम्र भर बग़दाद शहर की तामीर में लगा रहा और मुमकिन है कि इस वजह से भी उसे इमाम (अ0) की तरफ ध्यान देने की फुरसत न मिली हो बहरहाल इमाम उसके अहद में अमन व सुकून के साथ इमामत के फ़राएज़ अन्जाम देते रहे।

इसके तक़रीबन दस साल बाद 158 हि0 में आख़िर में जब मन्सूर दवानेक़ी की वफ़ात हुई तो मेहदी ख़लीफा हुआ। शुरु में उसने इमाम की कोई मुख़ालेफत नहीं की। मगर 164 हि0 में जब वह हिजाज़ हज करने के बहाने से आया तो इमाम मूसा काज़िम (अ0) को मक्का से बग़दाद ले गया और क़ैद कर दिया। हज़रत वहाँ एक साल तक क़ैद रहे। लेकिन हज़रत की शख़सियत से मुतास्सिर होकर मदीना वापस भेज दिया।

169 हि0 में ख़िलाफते हादी का दौरा आया। उसने हज़रत को कोई तकलीफ़ न पहुँचाई। उसने सिर्फ एक साल और एक महीने हुकूमत की।

इसके बाद हारून रशीद का दौर आया वह 170 हि0 में तख़्त पर बैठा। तख़्त पर बैठने के बाद ही से हारून रशीद को इमाम मूसा काज़िम (अ0) के क़त्ल की फ़िक्र पैदा हो गयी वह इमाम की मज़हबी हुकूमत को नहीं देख सकता था मगर इतनी दुश्मनी के बावजूद इमाम मूसा काज़िम (अ0) के ख़िलाफ कोई इल्ज़ाम न लगा सका। एक तरफ़ इमामे मूसा काज़िम (अ0) की अमन पसन्दी और ख़ामोश ज़िन्दगी, दूसरी तरफ सियासी मसाएल की दुश्वारियों ने उसे नौ साल तक इमाम से झगड़ने का मौक़ा न दिया। इब्ने बाबवैह वग़ैरा ने रिवायत की है कि ख़लीफा हारून रशीद ने चाहा कि अपनी औलाद को ख़लीफा मुक़र्रर करे। चुनानचे उसने मुहम्मद अमीन ज़ुबैदा के लड़के को वलीअहद बनाया और जाफ़र बिन अश्अस को उसका अतालीक़ मुक़र्रर किया। यह्या बिन ख़ालिद बरमकी हारून रशीद के वज़ीरे आज़म को जाफ़र बिन अश्अस से रिक़ाबत पैदा हो गयी। उसने ख़याल किया कि अगर ख़िलाफ़त मुहम्मद अमीन तक पहुँची तो वज़ारत का ओहदा मुझसे छीन लिया जाएगा उसने सियासी चाल चली कि जाफ़र बिन अश्अस पर शीईयत का इल्ज़ाम लगाया और कहा कि वह मूसा बिन जाफ़र को इमाम मानता है और जो कुछ उसे मिलता है उसका खुम्स हज़रत को भेजता है। हारून रशीद को जब यह मालूम हुआ तो उसको इमामे मूसा काज़िम (अ0) को तकलीफ़ पहुँचाने की फ़िक्र पैदा हो गयी। एक दिन उसने पूछा आले अबुतालिब में कौन ऐसा है जिसको बुलाकर मूसा बिन जाफ़र का हाल उससे पूछूँ। लोगों ने मुहम्मद बिन इस्माईल का नाम बताया जो हज़रत के भतीजे और इस्माईल की बेटे थे। इस्माईल हज़रत इमाम मूसा काज़िम के बड़े भाई थे और लोगों का ख़याल था कि इमाम जाफ़र सादिक़ के बाद वही इमाम होंगे लेकिन लोगों का ख़याल ग़लत निकला। और हज़रत इस्माईल की वफ़ात इमामे जाफ़र के अहद में ही हो गयी और इमाम मूसा काज़िम (अ0) को मन्सबे इमामत अता हुआ। नतीजा यह हुआ कि कुछ लोग इसके बाद भी उनही को इमाम समझते रहे। और इस्माईलिया फ़िरक़ा वजूद में आ गया। मुहम्मद बिन इस्माईल इसी वजह से इमाम मूसा काज़िम (अ0) से इख़्तेलाफ़ रखते थे चूँकि उनके मानने वाले तादाद में कम थे इसलिए वह इमाम से खुल्लमखुल्ला मुख़ालफत को मसलेहत के ख़िलाफ ख़याल करके ज़ाहरी तौर पर उनकी मुख़ालफत नहीं करते थे और उनके यहाँ आना–जाना भी रखते थे। हारून रशीद ने जब मुहम्मद बिन इस्माईल का नाम सुना तो उन्हें ख़त लिखकर बुलाया उन्होंने दरबारे ख़िलाफत में हाज़िर होने के लिए फ़ौरन बग़दाद जाने का इरादा कर लिया। उस वक़्त वह परेशान हाल थे यहाँ तक कि रास्ते के ख़र्च के लिए भी रुपये न थे। मुहम्मद बिन इस्माईल इमाम के पास आए हज़रत ने पूछा कहाँ का इरादा है? कहा बग़दाद का। कहा कि क्यों जाते हो? कहा परेशान हूँ और कर्ज़दार हूँ। मुमकिन है कि वहाँ

जाकर कोई सूरत पैदा हो जाए। हज़रत ने फ़रमाया मैं तुम्हारा क़र्ज़ अदा करूँगा और तुम्हारे ख़र्च का ज़िम्मेदार हूँगा। उन्होंने क़बूल न किया और कहा कि मुझे नसीहत कीजिये। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं नसीहत करता हूँ कि मेरे ख़ून में शरीक न होना और मेरी औलाद को यतीम न करना। फिर कहा कि कुछ और हिदायत कीजिये। हज़रत ने फिर वही फरमाया। यहाँ तक कि तीन बार यही वसीयत की। हज़रत ने चलते वक़्त उनको साढ़े चार सौ दीनार और पन्द्रह सौ दिरहम सफ़र के ख़र्च के लिए दिए। जब वह चले गए तो हज़रत ने फ़रमायाः ख़ुदा की क़सम यह मेरे ख़ून में शरीक होगा और मेरी औलाद को यतीम करेगा। लोगों ने कहा ऐ रसूलुल्लाह के बेटे! आप जानते हैं कि वह ऐसा करेगा और फिर एहसान करते हैं और इतना ज़्यादा माल देते हैं। फ़रमाया कि मेरे बुज़ुर्गों ने रिवायत की है कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया किः ''जब कोई शख़्स किसी के साथ एहसान करता है और वह उसके जवाब में बुराई करता है और वह शख़्स उसके साथ एहसान करने से बाज़ नहीं रहता तो हक़तआला उससे अपने रहम को हटा लेता है और अपने अज़ाब में गिरफ्तार कर देता है।

जब मुहम्मद बिन इस्माईल बग़दाद पहुँचे तो यहया बिन ख़ालिद बरमकी उनको घर ले गया और उनको सिखा दिया (अल्लामा मज्लिसी ने किताब जिलाउल उयून पेज–255 पर इस क़िस्से को नक़ल किया है) कि जब वह हारून के सामने जाएँ तो अपने चचा की निस्बत कुछ ऐसी बातें बयान कर दें जिससे वह ग़ुस्से में आ जाए और फिर उन्हें हारून के पास ले गया जब वह दाख़िल हुए तो ख़लीफा को सलाम किया और कहा कि मैंने एक वक़्त में एक मुल्क में दो बादशाह नहीं देखे। तू इस शहर में ख़लीफा है और मूसा बिन जाफ़र मदीने में ख़िलाफत कर रहे हैं। मुल्क के चारों तरफ से उनके पास टैक्स आता है। उन्होंने बहुत माल व हथियार जमा कर रखा है। हारून ने हुक्म दिया कि उन्हें दस हज़ार दिरहम दिए जाएँ जब वह घर लौटे तो उनके हलक़ में दर्द पैदा हो गया और उसी रात को उनका इन्तेक़ाल हो गया। वह रुपया ख़लीफा ने फिर वापस ले लिया।

उसी ज़माने में अब्दुल्लाह बिन हसन के फ़रज़न्द यहया के क़त्ल का दर्दनाक वाक़ेआ सामने आया। यहया से इमामे मूसा काज़िम (अ0) को कोई सरोकार न था बल्कि तारीख़ बताती है कि इमाम ने हुकूमत की मुख़ालफत से मना भी किया था। यहया बिन अब्दुल्लाह की मुख़ालेफ़त को बहाना बनाकर हुकूमत ने बनी फातिमा पर ज़ुल्म शुरु कर दिया और इमाम मूसा काज़िम (अ0) भी इस वाक़ेए के असर से न बच सके।

हारून ने 179 हि0 में अपनी औलाद की ख़िलाफत क़ाएम करने के लिए और इमामे मूसा काज़िम (अ0) की गिरफ़्तारी के लिए हज का इरादा किया और चारों तरफ़ फ़रमान भेजे के उलमा व सादात व ओहदेदारान और शरीफ़ लोग सब मक्के में हाज़िर हों ताकि उनसे बैअत ली जाए और अपनी औलाद की विलायत का एलान किया। मक्के बाद वह मदीना आया। दो एक रोज़ ठहरने के बाद इमाम मूसा काज़िम (अ0) को रौज़–ए–रसूल (स0) में नमाज़ की हालत में गिरफ़्तार करा लिया। यह वाक़ेआ 20 शव्वाल 179 हि0 का है। हारून ने दो डोलियाँ तैयार करायीं। एक को बसरा और दूसरी को बग़दाद अपने मुहाफिज़ दस्तों के साथ रवाना किया ताकि किसी को इमाम के ठहरने की जगह का पता न चल सके और कोई जमात इमाम को क़ैद से छुड़ाने की कोशिश न कर सके। ज़िलहिज्जा को

एक महीना सत्तरह दिन बाद आप बसरा पहुँचे। ईसा बिन जाफ़र हारून का चचाज़ाद भाई बसरा का हाकिम था। एक साल तक उसकी क़ैद में रहे। इमाम की बुलन्द सीरत और बड़ी शख़सियत ने ईसा के दिल को मुतास्सिर कर दिया। यहाँ तक कि उसने हारून को लिखा कि इमाम मूसा बिन जाफर को क़ैद करना दुरुस्त नहीं है हारून ईसा से बदगुमान हो गया और इमाम को बग़दाद बुला भेजा। वहाँ इमाम को फज़्ल बिन रबी की हिरासत में रखा गया। फिर फज़्ल बिन रबी का भी शीओयत की तरफ रुजहान देखकर उसने यह्या बरमकी को मुहाफिज़ मुक़र्रर किया।

शहादतः

सबसे आख़िर में इमाम सनदी इब्ने शाहिक की क़ैद में रहे। यह निहायत संगदिल और बेरहम इन्सान था। आख़िर इसी की क़ैद में हज़रत को अंगूर में ज़हर दिया गया। 55 साल की उम्र में 25 रजब 183 हि0 जुमे के दिन शहादत हुइ। आपकी लाश के साथ भी हुकूमत ने कोई इज़्ज़त वाला तरीक़ा न इख़्तियार किया। कुछ लोगों ने इमाम के जनाज़े को ले लिया और बग़दाद से बाहर दफ़न कर दिया। अब मदफ़ने इमाम काज़मैन के नाम से मशहूर है।

अख़लाक़ व औसाफः

सवानेह हयात इमामों का सबसे अहम हिस्सा, उनके अख़लाक़ व औसाफ़ का बयान है। इन्सानी किरदार की दुरुस्ती हर इमाम की ज़िन्दगी का मक़सद था। इसलिए हम कह सकते हैं कि तारीख़ का यही वह हिस्सा है जिसे इन्सानियत की तारीख़ का जौहर समझा जा सकता है। इमाम मूसा काज़िम के अलक़ाब उनके औसाफ़े हमीदा की निशानी हैं। यानी काज़िम (गुस्से को पीने वाले) साबिर, अमीन व सालेह। बेशक इल्म व बर्दाश्त की सिफ़त आप में बहुत ही ज़्यादा थी इसलिए आपका लक़ब काज़िम सबसे ज़्यादा मशहूर हो गया। लेकिन अमीन का लक़ब इस बात का सुबूत है कि आप अहमदे मुस्तफ़ा के हक़ीक़ी वारिस थे। और ''ख़ुल्क़े अज़ीम'' के आइना थे। और साबिर का लक़ब बताता है कि आपकी रगों में हुसैनी ख़ून दौड़ रहा था। आपके हुस्ने ख़ुल्क़ की बड़ाई का अन्दाज़ा इस वाक़ेए से होता है कि मदीने का एक हाकिम आपको तकलीफ पहुँचाता था और बार–बार हज़रत अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ0) की शान में गुस्ताख़ी करता था। आपके साथियों ने गुस्सा होकर आपसे बदले की इजाज़त चाही। आपने मना फ़रमाया और उसके पास ख़ुद तशरीफ़ ले गए और ऐसा तरीक़ा इख़्तियार किया कि वह अपनी गुस्ताख़ियों पर शर्मिन्दा हुआ और अपना रवैय्या बदल लिया। इसके बाद हज़रत ने अपने साथियों से पूछा कि वह तरीक़ा अच्छा था जो तुम लोग इख़्तियार करना चाहते थे या यह बेहतर है, जो मैंने इख़्तियार किया। उन लोगों ने मान कर कहा कि वही बेहतर है और हाकिमाना तरीक़ा था जो आपने पसन्द फ़रमाया।

इबादत की ज़्यादती की वजह से लोग आपको ''अब्दे सालेह'' के लक़ब से याद करते थे। आपको मामूल था कि हर नमाज़े सुब्ह के ताक़ीबात के बाद सिजदे में पेशानी रख देते थे और ज़वाले आफताब के बाद सर उठाते थे। सख़ावत और फैय्याज़ी में आपकी शोहरत थी।

किरदारे इमाम (अ0) से नौए इन्सानी को दर्से हक़ीक़त

इस ज़माने के नाख़ुशगवार माहोल में जब इन्सानी फ़िक्र को ख़ुदकामी और नफ्सानियत ने अपाहिज बना दिया है। जब सियासत ने

इन्सानियत का भेस बदल–बदल कर हक़ीक़त को मशकूक कर दिया है और जब दिमाग़ी इन्तेशार से हक़ीक़त का जज़्बा ठण्डा पड़ चुका है ज़रूरत है इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ0) के ऐसे रौशन फ़िक्र इन्सानों के तज़किरे से ज़हनों को रोशनी दी जाए जिन्होंने अपने बुलन्द पाया उसूलों की मदद से बड़ी से बड़ी मुशकिल में भी अज़्म व सिबात को हाथ से न जाने दिया। यक़ीनन उनका इल्म निहायत मुक़द्दस और हक़ीक़ी था वरना उनके किरदार में इतनी बुलन्दी नहीं पैदा हो सकती थी जिसका बार–बार मुज़ाहेरा हुआ।

ईसा बिन जाफ़र और फज़ल बिन रबी का इमाम की सीरत से मुतास्सिर हो जाना कोई मामूली बात नहीं है जो शख़्स क़ैद में हो उसकी शख़सियत उस वक़्त तक असरअन्दाज़ नहीं हो सकती जब तक वह इन्तिहाई बुलन्द पाया इन्सान न हो। इसलिए कि मजबूरी की हालत में इल्म व बर्दाश्त व सब्र का मुज़ाहेरा ज़्यादा असर वाला साबित नहीं होता। लोग ख़याल करते हैं कि मजबूरी का दूसरा नाम सब्र है। लेकिन यह वह बुलन्द पाया हस्तियाँ थीं जिनके यहाँ इक़तेदार के साथ ख़ाकसारी और मजबूरी के साथ वक़ारे नफ्स की शान नज़र आती है। इसलिए हर हालत में उनके नुफ़ूस ग़ैर मामूली तौर पर असर डालते थे।

मुहम्मद बिन इस्माईल के इरादे को जानते हुए भी इमाम ने उनके साथ एहसान किया। इसके माने यह हैं कि वह जानते थे कि नेकी खुद अपना बदला है। यह उसूल तमाम इन्सानियत और अख़्लाक़ का सरचश्मा है। इस उसूल से बेशुमार नतीजे निकलते हैं जो इतने अहम हैं कि उनके लिए मुस्तक़िल किताबों की ज़रूरत है। (देखें किताब ''फ़लसफ़–ए–तमद्दुन लेखक शहीद सफ़ीपुरी। इस किताब में मआशी, मुआशरती, सियासी, अख़लाक़ी और तमद्दुनी मसाएल का इल्मी हल पेश किया गया है। और ऐसी मुश्तरका बुनियादें बयान की गयीं हैं जिन पर फ़लसफ़ा व साईंस दोनों की बुनियाद क़ाएम होती है।)

1– जब नेकी खुद अपना बदला है तो मालूम हुआ कि नेकी फ़ाएदे वाली है।

2– चूँकि फ़ाएदे वाली चीज़ को इख़्तियार करना अक़्लमन्दी है इसलिए नेकी अक़्लमन्दी है।

3– क्योंकि इल्म ही अक़्लमन्दी है इसलिए नेकी इल्म है। (यही सुक़रात का कहना था कि नेकी इल्म है इसलिए इसकी तालीम दी जा सकती है।)

4– और क्योंकि इल्म कुदरत के क़ानून जानने का नाम है जो अल्लाह का लगाया हुआ है। इसलिए नेकी दीने फ़ितरत है यानी नेकी इन्सान की फ़ितरत है।

5– जब इन्सान की फ़ितरत नेकी है और नेकी इल्म है तो मालूम हुआ कि इल्म से नेकी पैदा होती है और जिहालत से बुराई।

6– जब बदी जिहालत से पैदा होती है तो बुरे इन्सानों से नफ़रत ग़ैर हकीमाना काम है। और यही सबब था कि इमाम ने मदीने के हाकिम के साथ नफ़रत भरा बर्ताव करने के बजाए उसके साथ अच्छा सुलूक किया। जिसकी वजह से वह अपने फेल पर शर्मिन्दा हुआ और उसने अपना अन्दाज़ बदल दिया।

यही नफ़रत इस वक़्त दुनिया में तमाम झगड़ों का सबब बनी हुई है। काश! इन्सान, इन्सान से मुहब्बत करना सीख जाए ताकि झगड़े और लड़ाई की तबाहियाँ ख़त्म हो जाएँ और दुनिया अमन व सुकून की जगह बन जाए। इन्सानी नस्ल का इस वक़्त मासूम इमामों के तरीक़ों से सबक़ लेने की ज़रूरत है। यही वह नज़र आने वाली हक़ीक़त है जिससे फ़ाएदा हासिल करके हक़ीक़त का सबक़ लिया जा सकता है। □□□